

भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान

कपास की खेती के लिए 13 से 19 जुलाई, 2015 साप्ताहिक सलाह

(35 मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्व-विद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक मौसम की रिपोर्ट :

राज्य / जिले	13	14	15	16	17	18	19	साप्ताहिक सलाह
पंजाब								<p>इस सप्ताह मौसम बदली और आर्द्र रहेगा कई स्थानों में आंधी के साथ की बारिश भविष्यवाणी की गई है। कसान वर्षा के दौरान संचाई न करें। कपास के प्रारंभिक विकास चरण में खेतों से अतिरिक्त पानी बाहर निकालें। कपास में सफेद मक्खी (Whitefly) का प्रकोप आर्थक सीमा (6 / पत्ती) से ऊपर बढ़ गया है। बादल मौसम और उच्च तापमान की वजह से खेतों में बैक्टीरियल ब्लाइट पत्ता तुषार दिखाई दिया है कोणीय पत्ता स्पॉट पत्तों के नसों के पास भूरे रंग के होते हैं देखा जा सकता है। इसके नियंत्रण के उपाय बारिश के बाद सफाई पर शुरू किया जा सकता है। जुलाई के अंतिम सप्ताह में भारी वर्षा के बाद पैरावॉल्ट (parawilt) होने की संभावना है। प्रारंभिक दौर में लक्षण का पता लगाने पर नियंत्रण के उपायों तत्काल करने से पैरावॉल्ट (parawilt) प्रकोप को नियंत्रित कर सकते हैं हरियाणा के कुछ स्थानों में CLCuD दिखाई दिया है और साथ ही रूट सड़ांध की समस्या को सबसे पहले संचाई के बाद देखा गया था। बादल के मौसम के कारण कपास की कलियों को झड़ते देखा गया है। जहां कहीं भी स्फीड मक्खी (Whitefly) ईटीएल स्तर (6-8 प्रौढ़ / 3 पत्ती) को पार कर गया है वहाँ कसानों को 1.0 लीटर / एकड़ @ नीम का तेल स्प्रे करने के लिए और रूट सड़ांध प्रभावित क्षेत्रों के लिए जड़ की आस पास कार्बेण्डाजिम@1 ग्राम / लीटर स्प्रे की सलाह दी जाती है। नियंत्रण रूप से लीफहूपर (leafhopper) निगरानी करें बादल का ये मौसम इसके संक्रामण के लिए अनुकूल है। जहां कहीं कपास के फसल में कलियों पुष्पित हो रही हैं वहाँ नाइट्रोजन: फास्फोरस: पोटेश (13: 0:45) छिड़काव की सलाह दी जाती है। नियंत्रण रूप से कीटों और रोगों के लिए फसल की निगरानी करने की सलाह दी जाती है।</p>
भटिंडा	4	0	0	0	4	46	44	
फरोजपुर	15	0	0	0	4	46	54	
मुक्तसर	0	0	0	0	4	33	54	
मानसा	0	0	0	0	0	4	12	
हरियाणा								
सरसा	0	0	0	0	0	0	7	
हिसार	9	0	0	0	0	0	10	
फतेहाबाद	0	0	0	0	0	0	12	
राजस्थान								<p>सप्ताह के अंत में बादल छाए रहेंगे और हल्की बारिश होगी। कसानों को मी की नमी को संरक्षित करने के लिए निदाई गुड़ाई (इंटर कल्चर) कार्यों करने की सलाह दी जाती है। क्षेत्र विशेष में लीफ हूपर का प्रकोप एवं प्रारंभिक लक्षणों के आधार पर रूट सड़ांध और पैरावॉल्ट (parawilt) के लिए क्षेत्र विशेष अनुसंधान उपचार उपाय शुरू किया जा सकता है। पैरेथराइड (pyrethroids) या फिप्रोनिल (Fipronil) की छिड़काव बिलकुल न करें, इन कीटनाशकों सफेद मक्खी (whitefly) का संक्रामण बढ़ जाएगा। नीम के तेल आधारित स्प्रे को प्राथमिकता दें।</p>
हनुमानगढ़	0	0	1	2	1	2	10	
श्रीगंगानगर	0	0	1	2	1	2	3	
बांसवाड़ा	0	0	1	2	1	0	3	
उड़ीसा								<p>कपास की बुआई जल्द से जल्द पूरा कर लें। लाल चना या कसी भी फली फसल को राईजोबियम उपचार के बाद कपास के साथ (Inter-cropping) लगाया जाना चाहिए। अंडी, गेंदा और मक्का जैसे ट्रैप फसलों को कपास की सीमा पर पंक्तियों में लगाया जाना चाहिए। खरपतवार नियंत्रण के लिए पहले ही खरपतवार नासक का छिड़काव करना चाहिए। जे सड के संक्रामण को कम करने के लिए, नीम आधारित कीटनाशकों का छिड़काव 2.5 मलीग्राम / लीटर पानी में मिला कर किया जाना चाहिए।</p>
कोरापुट	7	50	39	29	26	23	21	
कालाहांडी	24	41	32	29	23	20	12	
बोलांगीर	11	10	10	10	13	9	8	
गुजरात								<p>वडोदरा को छोड़कर अगले 6-7 दिनों के लिए वर्षा के कमजोर के पूर्वानुमान कर रहे हैं। बारिश तीसरे सप्ताह के दौरान कुछ जिलों में होने की उम्मीद कर रहे हैं, लेकिन जुलाई के आखिरी हफ्ते में और अगस्त की शुरुआत में राज्य भर में</p>
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	

कपास की खेती के लिए साप्ताहिक सलाह सं. 6/2015

जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	मौसम सूखा रहने की भव्यवाणी की गई हैं। वर्षा संघत क्षेत्रों में कपास की बुआई अब ना करें। जहाँ सचाई उपलब्ध हैं वहाँ युवा पौध को संघत करें। चूसक कीट की हल्की घटना देखी गई है। युवा पौध के मुरझाने का प्रबंधन साप्ताहिक सलाह दिये सलाह के अनुसार करें। फसल को बचाने के लिए संचाई करें। सफेद मक्खी (Whitefly) के संक्रमण होने की संभावना है। इसे से बचने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है जो कीटनाशक स्प्रे से समस्या बढ़ती है। उसका उपयोग ना करें। केवल नीम तेल आधारित स्प्रे सफेद मक्खी प्रबंधन के लिए उत्तम है विशेष कर प्रारम्भिक अवस्था में। पैरेथराइड (pyrethroids) या फप्रोनिल (Fipronil) की छिड़काव बिलकुल न करें,
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरुच	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	4	7	12	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	
मध्य प्रदेश								इस सप्ताह अल्प वर्षा की भव्यवाणी कर रहे हैं। वर्षा आधारित खेतों में अब बुआई ना करें। वर्षा संघत क्षेत्रों में जुलाई के 2-3 सप्ताह में बोई फसल जुलाई-अगस्त में कमजोर मानसून की होने के कारण भव्यवाणी नमी तनाव संभावना है अतः नमी संरक्षण के उपायों की जोरदार सफारिश की जाती है।
खरगोन	0	0	0	0	0	0	0	
धार	0	0	0	0	0	0	3	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र								मानसून के पूर्वानुमान के अनुसार आगे एक शुष्क अवध है, इस लिए नमी संरक्षण के उपायों की जोरदार सफारिश की जाती है। फसल की संचाई क्षेत्रों में शाकीय से कलियाँ निकलने की स्थिति में तथा वर्षा आधारित क्षेत्रों में शाकीय (वनस्पति) चरण में है। तुरंत इंटर कल्चर (Interculture) और निराई की सफारिश की जाती है टाप ड्रे संग सुझाए गए उर्वरकों डालना चाहिए। अब कसी भी कीटनाशक स्प्रे न करें।
नागपुर	0	0	0	0	0	0	5	
वर्धा	0	0	0	0	0	0	6	
चंद्रपुर	0	0	0	0	0	0	10	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	5	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	7	
अकोला	0	0	0	0	0	0	4	
बुलढाणा	0	0	0	0	0	0	4	
परभनी	0	0	0	0	0	0	6	
नांदेड	0	0	0	0	0	0	5	
बीड	0	0	0	0	0	0	6	
वा सम	0	0	0	0	0	0	7	
धुले	0	0	0	0	0	0	9	
जलगांव	0	0	0	0	0	0	9	
जालना	0	0	0	0	0	0	9	
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	11	
								अगले सप्ताह मानसून पूर्वानुमान के अनुसार कमजोर हैं। जुलाई के तीसरे सप्ताह में कुछ की बारिश के बाद, अंतिम सप्ताह शुष्क होने की भव्यवाणी की है। इंटर कल्चर (Inter-culture) कार्य तुरंत पूरा करें और सप्ताह के अंत तक बारिश होने की संभावना है, बारिश के बाद खेतों में उर्वरक डालें। यदि म 1 में पर्याप्त नमी नहीं है, तो खेतों में खाद नहीं डालना चाहिए। कपास के खेतों में में खरपतवार नियंत्रण के लिए होइंग (Hoeing) एवं निराई कया जाना चाहिए। फसल को सुरक्षित करने के लिए जहां संभव है वहाँ 3 cm गहराई तक संचाई कया जाना चाहिए। प्री मानसून कपास में पौधे के कुछ पैच लाल और कमजोर हो गए है तथा प्रारंभिक चरणों में पौधों में पैरा वल्ट के तनाव से उबरने के लिए साप्ताहिक सलाह में अनुशंसित प्रबंधन के तरीके अपनाने कर इनका नियंत्रण कया जा सकता है। वर्षा आधारित फसल में नमी तनाव हो सकता है अतः नमी संरक्षण प्रबंधन कया जाना चाहिए।
तेलंगाना								
आदिलाबाद	0	0	8	6	4	3	6	
वारंगल	0	0	8	5	6	4	6	
खम्मन	0	0	9	4	5	6	8	
करीमनगर	0	0	4	5	3	2	6	
नालगोंडा	0	0	4	3	4	2	6	
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर	0	0	8	6	10	4	8	
प्रकासम	0	0	6	8	5	4	6	
								सप्ताह के अंत में कम बारिश की भव्यवाणी की गयी है। संघत क्षेत्रों में बुवाई कर देना चाहिए। जहां भी बुवाई कया गया है कसानों को इंटर कल्चर और नमी संरक्षण करने की सलाह दी जाती है। वर्षा आधारित क्षेत्रों में इस सप्ताह के बाद बोये गए फसल अंकुरण और नमी तनाव की अधिक संभावना है। थ्रप्स और सफेद मक्खी का प्रकोप हो सकता है,कोई भी रासायनिक स्प्रे ना करें। जल्दी बुआई की फसल में लीफ हॉपर और व्हाइट फ्लाई देखा जाता है वहाँ नीम का तेल आधारित स्प्रे करें। कीट और रोगों के आरंभिक संक्रमण से बचने के प्रस्तावत कपास क्षेत्रों के मेढों को स्वच्छ और खरपतवार मुक्त रखें। गर्मियों में बोये कपास में पीलापन, पत्तियों का लाल होना और तेज हवा के साथ उच्च तापमान के कारण विकास अवरुद्ध को कम करने के लिए 1-2% KNO ₃ + 1% MgSO ₄ का छिड़काव सप्ताह में दो बार करें।
कर्नाटक								
धारवाड़	6	15	4	4	4	5	3	
हवेली	10	12	2	3	3	4	4	
मैसूर	4	8	2	2	3	8	7	

देसी कपास की कस्मे (जयाधर ,डीडीएचसी-11 और आरएएचएस-14) की बुवाई जुलाई के अंत तक बुवाई की जा सकती है। आवश्यक खाद की खुराक नहीं डाली गयी है , देसी कपास जून के पहले पखवाड़े के दौरान बोयी गयी है तो नाइट्रोजन फास्फोरस उर्वरक 40:25:25 के अनुपात में कलो/हेक्टेयर की दर से डालने की सफारिश की है।

त मलनाडू								
पेरमबेलूर	0	7	0	3	4	5	6	सप्ताहांत के दौरान आंशक रूप से बादल और अच्छी वर्षा की संभावना है। खेत तैयार करने कार्य चल रहा है। वर्षा साथ बुवाई शुरू करने की तैयारी है।
सलेम	0	6	0	13	8	13	14	
त्रिची	0	12	3	16	0	46	32	
वरडुनगर	0	15	17	24	27	53	41	

आदर्श वर्षा					
वर्षा म.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80

सीआईसीआर द्वारा प्रबंधन रणनीति की सफारिशें:

(के.आर. क्रांति द्वारा लखत: इस सलाह का कोई हिस्सा कसी भी प्रकाशन इलेक्ट्रॉनिक या प्रिंट या कस अन्य साधन में कसी भी रूप में लेखक के अनुमति के बिना इस्तेमाल कया जा सकता है।)

इस संक्षिप्त नोटमें प्रबंधन रणनीति की सफारिशें सीआईसीआर कए गए प्रयोगों के परिणामों के आधार पर और व भन्न राष्ट्रीय और वैश्विक एजेंसियों द्वारा कस सतपाारिस्थिति के अनुरूप कस सत दिशा-निर्देशों के आधार पर कया जा रहा है।

समान्य फसल स्वास्थ्य प्रबंधन:

- जल्दी परिपक्वहोने वाले या संकर-बीटी-कपास कस्मों को वर्षा संचत क्षेत्रों में प्राथमिकता दिया जा सकता है।
- पहली बारिश (80 ममी) वर्षा के तुरंत के बाद वर्षा संचत क्षेत्रों में जल्दी बुवाई को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए।
- वर्षा संचत क्षेत्रों में विशेष रूप से उच्च घनत्व रोपण व ध में लकीरें (रिजेज) पर बुआई सबसे ज्यादा कया जाता है।
- वर्षा संचत क्षेत्रों में जहां सचाई सुवधा हो वहाँ संकर-बीटी-कपास 90x30 सेमी दूरी पर अधिक चौड़ाई (व्यापक रिक्ति) में बोया जा सकता है।
- गैर बीटी कस्मों सूरज जैसे (सीआईसीआर) एनएच 615, (वी.एन.-भी, परभणी), एकेएच 081 (डॉ पीडीकेवीअकोला), फुले धन्वन्तरी (एमपीकेवी राहुरी) और अंजल (एलआरके516) जल्दी परिपक्वहोने वाली कस्में हैं यदि इन कस्मों को उच्च घनत्व में 15 जून से पहले 60x10 (फुलेधन्वन्तरी के लए 40x10cm) सेमी दूरी पर रोपण कया जाता है तो सूखा तनाव और बोलवर्म के प्रकोप से फसल बच जाएगा।
- गैर बीटी कपास की कस्मों की दो पंक्तियों के बीच एक पंक्ति में ब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकम से उपचारित लोबिया या सोयाबीन के बीज को 45 सेमी दूरी पर वैकल्पिक (आल्टर्नेट) पंक्तियों में 10 सेमी पौधे से पौधे दूरी पर लगाया जा सकता है।
- अंतर फसल (इंटर क्रोपिंग) में सोयाबीन या लोबिया के बीज को ब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकम से उपचारित कर संकर बीटी के साथ लगाया जा सकता है।
- कपास के खेतों की सीमा पंक्तियों में अरहर की (2-3 पंक्तियाँ) लगाने से मली बग (आटे के कीड़े) का प्रकोप को रोकने के लए सहायक होगा और ये रिफ्यूजिया (refugia) के रूप में सेवा करते हैं।
- पहली बारिश के बाद फार्म खाद या कम्पोस्ट 5 से 10 टन / हेक्टेयर की दर से खेतों में डाला जाना चाहिए।
- एजोबेक्टर और पीएसबी 25 ग्राम प्रति क्लोग्राम बीज की दर से पोषक तत्वों नियतन (फक्सेशन) के लए इस्तेमाल कया जाना चाहिए।
- क्राइ 1 एसी (Cry1Ac) की उचित अभ्यक्ति सुनिश्चित करने के लए और पत्ता लाल रोग की समस्या को कम करने के लए 1% कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव करें। स्थूल और सूक्ष्म पोषक के लए अनुकूल पोषक तत्व प्रबंधन क्राइ 1 एसी (Cry1Ac) की उचित अभ्यक्ति सुनिश्चित करने और पत्ता लाल रोग की समस्याओं को कम करने के लए MgSO₄ 2% यूरिया के साथ 2% डीएपी का छिड़काव करें। वल्ट के प्रारंभिक चरण में पौधों की रिकवरी के लए 1% कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव तथा 1% बाबेस्टीन से तने के आस पास की मी को गीला (तर) करें यह फसल की तंदरुस्ती के लए मददगार पाया गया है।

12. पत्ता लाल रोग का निवारण:90 दिन के फसल मे 2% यूरिया,0.5% जिंक सल्फेट और 0.2% बोरान दो बार में 15 दिनों के अंतरालमें छिड़काव से लाल पत्ता रोग से बचाव होगा।
13. क लर्यों (स्क्वेयर) और फूलों का झड़ना रोकने के लए फनोलेक्स 4.5 एसएल ((एनएए) हार्मोन, 21 पीपीएम 7 लीटर प्रति 15 लीटर पानी के दर से मला कर स्प्रे करें।

कीटों एवं रस चूसक कीटों का प्रबंधन:

सामान्य सफारिशें

ये करें:

1. कीट एवं रस चूसक कीट प्रतिरोधी कस्मों/संकरोंका चयन करें। बीटी संकर कस्में कीट एवं रस चूसक कीट प्रतिरोधी होते हैं इनमें कीटनाशकों के छिड़काव की आवश्यकता बहुत कम होती है।
2. कपास के फसल के साथ लोबिया या चारा (सोरगम) या सोयाबीन अथवा काले चने के साथ अंतर-फसल (इंटर-क्राप) लगाने से चूसक कीटों के भक्षक/शिकारी कीटों (प्रडेटर) की वृद्धि के प्रोत्साहन के लए लगाना चाहिए।
3. इमेडाक्लो फ्रड 8 ग्राम, वटावेक्स या थरम 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में उपयोग से चूसक कीट (स कंग पेस्ट) और रोगों के खिलाफ फसल की रक्षा करेगा।
4. चूसक कीट के लए विशेष रूप से अतिसंवेदनशील कस्मों में नाइट्रोजन उर्वरकों का उपयोग करने से इससे होने वाले नुकसान को बहुत कम करता है।
5. खेत की स्वच्छता (घाँस मुक्त) बनाए रखें।
6. मली बग संक्रमित पौधों को बाहर निकालें और कपास के खेत से दूर नस्ट करें।
7. कम घटनकारी कीट प्रबंधन के लए नीम से तैयार कीटनाशक और जैविक नियंत्रण वकल्पका उपयोग करें।
8. गुलाबी सूँडी (पंक बोलवर्म) की निगरानी के लए फेरोमोन ट्रेपका उपयोग कुशल एवं प्रभावकारी साधन है।
9. मरीड बग, मली बग और अन्य चूसक कीटों (स कंग पेस्ट) के प्रभावी एवं पर्यावरण के अनुकूल नियंत्रण के लए पौधों के तनों में और जड़ों के आस पास इमेडाक्लो फ्रड डाइमैथोथेट या एसफेट 30-40 डीएस और 50-60 डीएस का उपयोग प्रभावी नियंत्रण के लए करें।

ये ना करें:

10. कपासमेंपर्ण कुंचन वायरस के प्रकोप को रोकने के लए उत्तर भारतीय क्षेत्रों में देर से (15 मई के बाद) कपास की बुआई करने से बचें।
11. कीटों के प्राकृतिक एवं स्वाभाविक जैविक नियंत्रण के लए जहां तक संभव हो सके फसल के पहले दो माह तक रासायनिक कीटनाशक के उपयोग ना करें।
12. कपास के पत्ता मरोड़क (लीफ फोल्डर) के नाबा लक और नगण्य लेप्टोटेरीन कीटों जैसे की साइलेप्टा डेरोगेटा एमोनिस फ्लेवा और से मलूपर के लए कीटनाशक का छिड़काव न करें। इनके लार्वा से कपास की नगण्य नुकसान होता है। ये पैरासिता की लए मेजबान के रूप में सेवा देता है। जैसे ट्राइकोडर्मा, एपेंटेल्स और साइसीरोपा फार्मासा प्रजाति जो हेलोकोवर्पा आर्जिमेरा और अन्य बालवर्म पर हमला कर उनको नष्ट करता है।
13. चयन के दबाव से बचने के लए बीटी कपास पर बीटी-योगों का स्प्रे न करें।
14. पत्तों से संबन्धित नियोनिकोटिनाइडकीटनाशकों का उपयोग करने से बचें जैसे क एसेटामी प्रड), ई मडाक्लो प्रड क्लो थए डन औरथाईमैथोजेम,चूंक संकर कपास के बीज इमेडाक्लो प्रड से उपचरित होते हैं इस लए कीटों में इनके और उपयोग से इनके प्रति प्रतिरोध क्षमता बढ़ जाने की संभावना होती है।
15. डब्ल्यूएचओ ग्रेड -1 कीटनाशकों का उपयोग न करें। अत्यंत खतरनाक श्रेणीके कीटनाशकों जैसे कफास्फे मडोन मथाइलपैरा थओन,फोरेटे,मोनोक्रोटोफॉसडाईक्लोवॉसकार्बोफुरानट्राईजोफासऔरमेटासाइस्टोस।
16. फप्रोनिलऔर पाइरेथ्रोइडसफेद मक्खी (व्हाइटफ्लाई)के प्रकोप रोकने के लए न करें।
17. कीटनाशक मश्रण का उपयोग बिलकुल ना करें कीटनाशक मश्रण से पारिस्थितिकी प्रणा लर्यों (इको- सस्टम) बाधत होती है जो गंभीर रूप कीट प्रकोप आमंत्रित करती हैं।ये कीटनाशक लक्षित नाशीकीटों के लए चयनित अति वषैले है जब क कपास पारिस्थिकीतंत्र में लाभदायक कीटों के लए कम वषैले हैं। ये कीटनाशक पर्यावरण हितैषी कीटनाशक प्रतिरोधता प्रबंधन कार्यक्रम के लए उपयुक्त है।

गुलाबी सूँडी और चतिदार सूँडी : इनके लिए आर्थक हानि सीमा है - 10 हरे गुलरों में एक जीवत सूँडी मलने पर या लगातार तीन रातों में 8 पतंग (कट) प्रति ट्रेप प्रति रात पकड़ में आने पर; क्विनोलाफास 25 ईसी या का 2 मली प्रति लीटर पानी की दर से या थायोडकार्ब 75 डब्लू पी का या कोई पाइरेथ्रोइड का फसल पर छिड़काव करें।

अन्य कीटों का नियंत्रण:

- 1) स्पोजोप्टेरा लटुरा: इसइल्लेकेअण्ड पुंजों कोहाथ से इकत्र करें अथवा एसएनपीवी (स्पोजोप्टेरा लटुरा न्यूक्लियर पॉलीहेड्रोसस वायरस) का 500 एलई/हे. की दर से या नोवाल्ग्रोन 10 ईसी का 200 मली या थायोडकार्ब (लार्वन) 75 डब्लू पी 250 ग्राम पाउडर 250 लीटर पानी में मला कर प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- 2) प्ररोह घून के नुकसान को कम करने के लिए प्रोफेनोफास 2 मली प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।
- 3) भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: प्रलोभक मेटेल्डीहाइड 2% (स्नेल कल) 12.5 क. ग्रा. / हे. की दर से घोंघों के छिपने की जगह पर प्रयोग करें। मेटों, फसल के चारों ओर उन जगहों पर डालें जहां इनका नुकसान दिखायी दे।

रोग प्रबंधन:

नवीन मुरझान (पैरा वल्ट) मुरझान/जड़ गलन:

कुछ खेतों में सूखा के बाद वर्षा होने या सचाई करने पर इसके लक्षण फसल में दिखायी देते हैं। प्रभावित पौधों पर मुरझान के लक्षण दिखायी देने के कुछ घंटों में ही कोबाल्ट क्लोराइड 10 म. ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर (पीपीएम) से छिड़काव करे या प्रभावित पौधों की जड़ों में कापर-आक्सी-क्लोराइड 25 ग्रा. तथा यूरिया 200 ग्राम या कार्बेन्डेजिम 1 ग्रा./लीटर की दर से 10 लीटर पानी लेकर मी को तर करें।

गूलर सड़न: साधारणतः प्रारम्भिक वक सत पौधे के निचले हिस्से के गूलर बादलों के मौसम या लगातार रिम ड्रम बारिसहोते रहने की स्थिति में गूलर सड़ जाता है। मैकोजेब 75 डब्लूपी + क्लोरो थैलोनिल 70 डब्लूपी प्रत्येक 2 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी की दर से ले कर फसल पर छिड़काव करें। अच्छा पराभव लाने के लिए सल्वेट 99 के 10 ग्राम या 10 ग्राम ट्राइटन 50 मली 100 लीटर पानी की दर से मलाए।

एल्टरनेरिया अंगमारी: मैकोजेब 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

माइरोथे सयम पत्ती धब्बा रोग और जीवाणु झुलसा: स्टेप्टोसाइक्लीन सल्फेट (15-20 ग्रा.हे.)+कापरआक्सीक्लोराइड (2000 ग्रा.हे.) 200-250 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन: छोटे खरपतवारों पर खरपतवारनाशक अधिक प्रभावी होते हैं।

घासों: क्वीजेलोपोफ- इथाइल या फेनोक्साप्रोप-इथाइल या फ्लूएजीफोप-ब्यूटाइल का छिड़काव।

नरकर और घासों: प्रोपेक्विजाफोप-इथाइल का छिड़काव करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार: पाइरो थियोबेक सो डयम का छिड़काव करें।

खरपतवारों उगने पर खरपतवार नाशकों से उनका समयबद्ध एवं प्रभावी नियंत्रण होता है। जब खेत की मी गीली हो तो हाथ से निराई में मुश्किल हो जाती है ऐसे नैशाकनाशी विशेष रूप से प्रभावी और समय पर नियंत्रण प्रदान करता है। खरपतवारनाशी (हर्बिसाइड) नवजात खरपतवारों (10-15 दिनों आयु से कम) पर अधिक प्रभावी एवं कारगर होते हैं। घाँसकुल के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए क्लोज़ईलोफोपइथाइल, फेनोक्सप्रोप सो डयम, फ्लुयाजीफोप ब्यूटाइल, का प्रयोग कर सकते हैं। नरकर और घासों के लिए पायरिथोबक ईथाइल हैं और चौड़ी पत्तीवाले खरपतवारों के लिए पायरीओ थोबेक सो डयम कारगर है। अधिक जानकारी के लिए कृषि विश्वविद्यालयों तकनीकी विशेषज्ञों से वचन वमर्श कर सकते हैं।

जल जमाव प्रबंधन: कपास अतिरिक्त पानी के लए बहुत संवेदनशील है। मध्य और दक्षिण भारत के कई हिस्सों में अधिक बारिश कारण के पानी का जमाव होने से समस्याग्रस्त कया जा सकता है। गहरी काली मी पर उगाए गए कपास जहां पानी निकासी व्यवस्था कमजोर है वहाँ जल जमाव की वजह से कपास की फसक प्रभावित है। भारी वर्षा की स्थिति में खेतों से पानी निकासी के लए भूम के ढलान के साथ पर्याप्त मात्रा में जल निकासी चैनलों या अतिरिक्त तरीके से पानी निकासी की व्यवस्था करें। उन क्षेत्रों में जहां वर्षा अधमानतः 700-900 ममी हो वहां मी में बेहतर की नमी संरक्षणके लए भूम को पुनः निर्माण कर लकीरें (रिजेज) रिज हल की मदद से बनाए। यह तकनीकी और कपास की लकीर (रिजेज) में बुवाई से वर्षा जल का संरक्षण होगा और ये रिजेज और फ़रोज भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में अतिरिक्त जल के लए जल निकासी चैनलों की तरह कार्य करते हैं।

इनेज चैनल खेतों की सीमाओं में साथ खोला जाना चाहिए, जिससे अतिरिक्त जल आसानी से खेतों से निकाला जा सके। यदि बुवाई अभी तक पूरा नहीं कया गया तो रिजेज और फ़रोजके शीर्ष में तुरंत बुवाई शुरू करने के लए सफ़ारिश की है। यह मानना है क रिजेज के शीर्ष पर लगाकर लकीरें अतिरिक्त पानी बाहर निकाल जाएगा जिससे भारी बारिश फसल को प्रभावित नहीं करेगा क्यों क रिजेज और फ़रोज के निर्माण से अतिरिक्त जल खेतों से बाहर निकाल जाएगा। यदि भारी बारिश के मौसम का पूर्वानुमान कर रहे हैं तो फसल उत्पादन लागत घाटे को कम करने की लए उर्वरक छिदकव स्थगित कया जा सकता है।

फसल जल जमाव के कारण पौधा पीला हो जाता है तो 0.5-1.0% डीएपी या 19:19:19 (नाइट्रोजन के घुलनशील योगक) का पत्तों पर साप्ताहिक अंतराल में छिड़काव (फोलियर स्प्रे) करने से पौधों जल जमाव के प्रभाव से उबरने में मदद मलेगी।

साप्ताहिक मौसम सलाहकार रिपोर्ट समन्वय टीम:	
वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर.क्रांति	निदेशक, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ.ए.एच.प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक, एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (त मलनाडु)
डॉ. डी.मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, सरसा (हरियाणा)
डॉ एस.बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज डीसूजा	प्रधान, फसल उत्पादन वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (त मलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (त मलनाडु)

वैज्ञानिक	पता	मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. परमजीत सिंह	पंजाब कृषि विश्व विद्यालय, (पंजाब)	9463628801	rsmeenars@gmail.com
डॉ. पंकज राठौर	पंजाब कृषि विश्व विद्यालय, (पंजाब)	9464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्व विद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	9416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्व विद्यालय, सरसा-124004 (हरियाणा)	9255947380	slahuja2002@yahoo.com

कपास की खेती के लए साप्ताहिक सलाह सं. 6/2015

डॉ. के. एन. भाटिया	स्वामी केशवानन्द राजस्थान, कृष वश्व वद्यालय, गंगानगर (राजस्थान)	9352700411	bsmeena1969@rediffmail.com
डॉ. हरफूल मीणा	महारणा प्रताप, कृष एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)	9460246043	hpagron@rediffmail.com
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृष वश्व वद्यालय, सरसा-124004 (हरियाणा)	9255947380	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. नरेंद्र कुमार	सीएसए- कृष एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, कानपुर (उ. प्र.)	9335699132	jagdishk64@yahoo.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृष वश्व वद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	9662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. एम.डी. खानपारा	जूनागढ कृष वश्व वद्यालय, जूनागढ -362001 (गुजरात)	9426990070	cotton@jau.in
डॉ. आर.डब्लू. भरूद	महात्मा फुले कृष वद्याहपीठ, रीठरी-413722 (महाराष्ट्र)	9850244087	cotton_mpkv@rediffmail.com
डॉ. आर.आर. पाटिल	पंजाब राव देशमुख कृष वद्याहपीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	9657725801	srscottonpdkv1@yahoo.co.in
डॉ.पी.आर.झाँवर	मराठवाडा कृष वश्व वद्यालय, प्रभनी-431402 (महाराष्ट्र)	7588151244	crsned@indiatimes.com
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृष वश्व वद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	9406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उडीसा-कृष एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उडीसा)	9437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृष वश्व वद्यालय, एलएएम गंटूर (आंध्रप्रदेश)	949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. शर्मा	आचार्य एन जी रंगा कृष वश्व वद्यालय, नांदयाल (आंध्रप्रदेश)	08514-242296	sharmarars@gmail.com
डॉ. अलादिकी	धारवाड कृष वश्व वद्यालय, धारवाड (कर्नाटक)	9448861040	yaladakatti@rediffmail.com
डॉ. भीमना	रायचूर कृष वश्व वद्यालय, रायचूर-584102 (कर्नाटक)	9448633232	bheemuent@rediffmail.com

नोट: यदि अधोलखत जानकारी (जैसे: कीटनाशक, रसायन, क्षेत्र या कस मात्रा या संख्या) में दुवधा हो तो संका समाधान के लए अंग्रेजी अंक से संका समाधान करें।

हिन्दी संस्करण: रजनीकान्त चतुर्वेदी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, पांजरी, वर्धा रोड, नागपुर-441108 (महाराष्ट्र)

दूरभाष-07103,275549, ईमेल: cicrnagpur@gmail.com वेबसाइट: www.cicr.org.in

कपास की खेती के लए साप्ताहिक सलाह सं 6/2015 13 से 19 जुलाई साप्ताहिक सलाह (35 मानक सप्ताह)

-- इति --